

सांसद ज्योत्सना महंत ने जिस एक गांव को गोद लिया, वही गर्मियों में प्यास से बेहाल कचरे में पड़ा सिसक रहा है

खस्ताहाल सड़क, कचरे और गंदगी में पड़ा गांव, शायद गोद लेने के बाद से नहीं पड़े सांसद ज्योत्सना महंत के चरण

**बारिश में कीचड़ और गर्मी में
पानी की किलत से जूँड़ा रहे
ग्रामीण, पोटो खिंचाकर गायब
हुई सांसद को मदद के लिए 5
साल ढूँढ़ते रह गए लोग**

कोरबा(विश्व परिवार)। गांवों को गोद लेकर शहर की तरह बनाने का सञ्जबाग दिखाने वाली सांसद श्रीमती ज्योत्सना चरण दास महंत ने दोबारा उनकी ओर पलट कर नहीं देखा। तस्वीरें खिंचवाकर खुद का गुणगान करने का मौका ढूँढ़ने वाली निषिक्य सांसद ने कोरबा लोकसभा क्षेत्र का एक गांव गोद ले लिया। गांव सुधार का जिम्मा तो उठा लिया पर इस मौके की फेटो खिंचवाने के बाद



से सांसद ज्योत्सना के चरण उधर न घूमे। आलम यह है कि गांव में रहने वाले कई ग्रामीण खुद ही नहीं जानते कि वह सांसद कौन हैं, जिन्होंने खुद को उनका पालक

घोषित कर बेसहारा छोड़ दिया है। गांव में जहां बारिश के मौसम में गलियाँ कीचड़ से सराबोर रहती हैं, वर्तमान गर्मी के सीजन में लोग पानी की कमी के चलते प्यास से बेहाल देखे जा सकते हैं। गांव कूड़ा करकट और गंदगी में पड़ा सिसक रहा है। खस्ताहाल सड़कों में ग्रामीणों के पैर छालों से लबरेज हैं। अब आप ही सोचिए कि पांच

साल से इंतजार कर रही जनता भला अपनी बेपरवाह सांसद से आगे और क्या उम्मीद कर सकती है, जो दोबारा उन्हें अपना कीमती मत देकर अपने ही पैरों में कुल्हाड़ी मारने की गलती दोहराए। आपको बता दें कि कोरबा लोकसभा क्षेत्र की मौजूदा सांसद श्रीमती ज्योत्सना चरणदास महंत ने पांच साल के अपने कार्यकाल में वैसे तो दो-दो गांव गोद लिए, पर किसी एक की भी दशा न सुधार सकीं। यहां आज भी खासकर गर्मी के मौसम में नीचे गिर जाने वाले जल स्तर में पानी का भारी संकट महसूस किया जा सकता है। सांसद ज्योत्सना ने जिला मुख्यालय से 30 किलोमीटर की दूरी पर स्थित कटघोरा ब्लाक के अंतर्गत छुरैना को गोद ले रखा है। इस में पेयजल एक बड़ी समस्या गांव के पास कोयला का खक्षेत्र है, जिस वजह से जल स्तर भारी गिरावट आई है। गर्मी में समस्या और भी विकट हो जाती है, लेकिन जनता को इस समाधान अब तक नहीं मिला। इसके अलावा सांसद की ओर स्वीकृत किए गए कई विवरण कार्य अब तक शुरू नहीं हो रहे हैं। सांसद निधि लोगों की मद्दत और जन कल्याण के लिए ही है, पर सांसद ज्योत्सना मात्र नहीं, इसका भी उपयोग न तो ठाकुर तरह से कर पाई और जहां हुआ वहां भी आधी-अधूरी व्यवहार आज भी देखी जा सकती है।

**यातायात के नियमों की अवहेलना करने वाले 230 वाहन पुलिस में दर्ज मामला रफ- दफ करने टगा
चालको से 143600 रुपये समन शुल्क वसूला गया चार लाख, आरोपी जेल दाखिल**

वाले 16 वाहन चालकों से



वाहन चलाते समय मोबाइल फ़ोन बात करने वाले वाहन चालकों, मौके पर वाहनों के दस्तावेज प्रस्तुत ही करने, रेड सिग्नल जम्प करने वाले वाहन चालकों, दोपहिया वाहन में तीन सवारी वाहन चलाने वाले वाहन चालकों एवं लापरवाही पूर्वक वाहन चलाने वाले वाहन चालकों, अस्वैधानिक पार्किंग के विरुद्ध सख्ती से कार्यवाही करते हुए कुल 230 वाहन चालकों से 143600 रुपये समन शुल्क वसूल किया गया है। कार्यवाही के दौरान वाहन चलाते समय मोबाइल फ़ोन पर बात करने वाले 52 वाहन चालकों से कुल 15600 रुपये समन शुल्क वसूल किया गया, मौके पर वाहनों के दस्तावेज प्रस्तुत नहीं करने पर 13 वाहन चालकों से 3900 रुपये समन शुल्क वसूल किया गया, रेड सिग्नल जम्प करने

मकान में आग लगने पर मकान में फसे पांच लोगों को पुलिस टीम की सूझबूझ से किया गया सुरक्षित रेस्क्यू

ગુજરાત (વિશ્વ પરિવાર) | સદસ્ય સમી પ્રથમ તલ મે સે ઘર મે લાંબા વિનાના કા હંનાના કા રહે શે
નિના દેંગ ગત થાના વિનાના કા હંનાના કા રહે શે

परिवार दृष्टि द्वारा बाजे गेतवाली पुलिस टीम कों बुँडला सिटी आवसीय परिसर ध्यत एक मकान मे आग लगने की सूचना प्राप्त हुई, आवसीय परिसर मे भयावह लगने की घटना की सूचना पर राजपत्रित पुलिस अधिकारियों के नेतृत्व मे नाना कोतवाली पुलिस टीम द्वारा मौके पर पहुँचकर देखा या जो आस पास के लोगों द्वारा 03 बच्चों सहित कुल 05 अप्रक्रियों के मकान मे फ़से होने वाली सूचना प्राप्त हुई, घर मे लग भयावह रूप धारण कर की थी घर मे फ़से परिवार के

मानव श्रृंखला, सायकल
रैली, दिव्यांग रैली तथा नव
सहित अन्य कार्यक्रमों में शामिल होकर लोकतंत्र को मजबूत बनाने का उद्देश्य रखा। यह ऐसे मतदाता भी इसे अपना अधिकार व कर्तव्य मानते हुए घर से बाहर चलने के लिए आये थाएँ।

मानव श्रृंखला, सायकल
ऐली, दिव्यांग ऐली तथा नव
वधु सम्मेलन के माध्यम से
किया गया जागरूक

स्वीप अंतर्गत हुआ अनेक प्रतियोगिताओं का आयोजन

कोरबा (विश्व परिवार)।
लोकसभा निर्वाचन 2024
अन्तर्गत कोरबा के मतदाताओं को
मतदान करने हेतु प्रेरित करने
स्थीप अन्तर्गत गतिविधियां जिला
प्रशासन द्वारा निरंतर संचालित की
जा रही है। इसी कड़ी में साइकल
रैली, दिव्यांग रैली, नववधु
सम्मेलन, मेहंदी, रंगोली एवं
शपथ कार्यक्रम, कॉलेज/स्कूली
छात्र-छात्राओं का मानव श्रृंखला,
एनसीसी, एनएसएस एवं स्काटड
गाइड द्वारा नक्कड़ नाटक,



फलैशमॉब कार्यक्रम के तहत कॉलेज के बच्चों द्वारा डांस आदि का आयोजन कर मतदाताओं को जागरूक किया गया। कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी श्री अजीत वसंत सहित जिले सभी अधिकारियों की उपस्थिति में शहर के आम नागरिकों, युवाओं तथा विद्यार्थियों ने साइकल रैली

सहित अन्य कार्यक्रमों में शामिल होकर लोकतंत्र को मजबूत बनाने का संकल्प लिया। इस दौरान शहरवासियों में मतदान को लेकर उत्साह नजर आया। कलेक्टर एवं नगर निगम आयुक्त ने शपथ दिलाकर सभी को 07 मई मतदान दिवस के दिन मतदान करने की अपील की। सीएसईबी ग्राउण्ड में आयोजित कार्यक्रम के संबोधित करते हुए कलेक्टर श्री वसंत ने कहा कि हमें संविधान से मतदान करने का अधिकार मिल है। हम अपने अधिकारों का प्रयोग करके जैसा समाज व सिस्टम चाहते हैं, देश के लोकतंत्र को मजबूत बनाना चाहते हैं तो मतदान अवश्य करना चाहिए भले ही चुनाव 05 साल में एक बार आता है लेकिन यह हम सभी के लिए बहुत महत्व रखता है कलेक्टर ने कहा कि शहरी

संक्षिप्त समाचार

**2 दिन बाद जिले में शुरू होगा
तेंदुपता संग्रहण कार्य**

कोरबा(विश्व परिवार)। बोलचाल की भाषा में ग्रीन गोल्ड कहा जाने वाला तेंदू पत्ता का संग्रहण कार्य कोरबा जिले में 2 दिन बाद शुरू हो जाएगा। फैस्ट डिपार्टमेंट की ओर से इस कार्य को परिवान चढ़ाने के लिए आवश्यक तैयारी पूरी कर ली गई है। कोरबा जिले के अंतर्गत आने वाले कोरबा और कटघोरा बन मंडल में कुल 12 बन परिक्षेत्र हैं। यहां वर्ष 2024 के सीजन में लगभग 1 लाख मानक बोरा तेंदूपत्ता का संग्रहण करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। इसके लिए प्राथमिक तैयारी मार्च महीने से की जा रही थी। सभी फॉन्स में लघु बन उपज समितियां के माध्यम से इस काम को कराया जाना है। बन अधिकारी ने बताया कि नोडल ऑफिसर के अलावा अन्य स्तर पर कर्मचारियों को नियुक्त किया गया है जो व्यवस्था को देखेंगे। प्रदेश सरकार की ओर से इस वर्ष प्रति बोरा संग्रहण के लिए 5000 रुपए का समर्थन मूल्य घोषित किया गया है इसलिए भी तेंदू पत्ता संग्रहण को लेकर ग्रामीण क्षेत्रों में गर्मी के बावजूद उत्साह बना हुआ है। 1 महीने तक चलने वाले इस काम के लिए जरूरी तैयारी की गई है। जिला लघु बनोपज यूनियन पूरे कामकाज का नियंत्रण करेगी। बताया गया है कि तेंदूपत्ता की गुणवत्ता के आधार पर ही उसके कॉन्ट्रैक्ट सुनिश्चित होते हैं। छत्तीसगढ़ के अलावा कई राज्यों की पार्टियां बीते कई वर्षों से कोरबा जिले में उत्पन्न होने वाले तेंदूपत्ता को लेकर सचिं लेती रही हैं। कोरबा बन मंडल में न केवल तेंदूपत्ता उपलब्ध है बल्कि कई प्रकार की बनस्पतियां भी अपनी मौजूदगी दर्ज कराती हैं।

चरित्र संदेह को लेकर
पत्नी की कुदाली मारकर
हत्या, पति गिरफ्तार

कोरबा(विश्व परिवार)। आदतन शराबी पति ने चरित्र शंका को लेकर धारदार कुदाली से पत्नी पर वार कर दिया। गंभीर रूप से चोट लगने पर पत्नी की मौत हो गई। सूचना पर पुलिस ने आरोपित पति को गिरफ्तार कर लिया। अधिकारिक जानकारी के अनुसार घटना दीपका थाना अंतर्गत राजीव नगर झाब में रविवार को हुई। यहाँ पूलसाय भगत अपनी पत्नी ग्लोरिया बाई भगत 48 वर्ष, दो पुत्री रचना भगत 21 वर्ष, एकता भगत 16 वर्ष, दो पुत्र अर्पित भगत 18 वर्ष तथा आयुष भगत सात वर्ष के साथ एक किराए के मकान में निवास करता है। बताया जा रहा है कि पूलसाय शराब पीने का आदी था और अक्सर शराब के नशे में रहता था। बताया जा रहा है कि पूलसाय अक्सर अपनी पत्नी पर चरित्र को लेकर शंका करता था और इसी बात पर दोनों के मध्य विवाद होता था। रविवार को वह नशे की हालत में घर पहुंचा। इस दौरान पुनः दोनों के मध्य विवाद हुआ। इस पर घर में खब कुदाली से उसने पत्नी पर वार कर दिया। घटना में गंभीर रूप से घायल ग्लोरिया बाई को उपचार के लिए अस्पताल में दाखिल कराया गया, जहाँ डाक्टरों ने परीक्षण के बाद मृत घोषित कर दिया। घटना की सूचना मिलते ही दीपका पुलिस ने आरोपित पति पूलसाय को गिरफ्तार कर लिया। दीपका थाना प्रभारी युवराज तिवारी ने बताया कि पूछताछ में पूलसाय ने हत्या करना स्वीकार कर लिया है। उसका कहना है कि पाप का अंत कर दिया है और उसका कोई पछताचा नहीं है। बहरहाल मामले में पुलिस ने आरोपित पति के विरुद्ध हत्या का मामला कायम कर अपने स्तर पर जांच शुरू कर दी है। हत्या किए जाने से मां नहीं रहीं वही पिता के जेल जाने से चारों बच्चे बेसहारा हो गए।

**पत्थलगाव और लोदाम में
महिलाओं ने निकाली
जागरूकता रैली**

जशपुरनगर(विश्व परिवार)। जिले में स्वीप कार्यक्रम के तहत विभिन्न गतिविधियां जारी हैं। लोकसभा निर्वाचन 2024 में शत-प्रतिशत मतदान के लिए जिले भर में मतदाता जागरूकता अभियान चलाया जा रहा है। विभिन्न ग्राम पंचायतों की स्वयं सहायता समूह की महिलाओं द्वारा सभी कलस्टर में नए मतदाताओं को मतदान के लिए प्रेरित किया जा रहा है। इसी कड़ी में जशपुर, पट्थलगांव सहित अन्य ब्लॉक और ग्रामों में स्वयं सहायता समूह की महिलाओं ने मतदाता जागरूकता रैली निकालकर और रंगोली बनाकर मेहंदी लगाकर लोगों को मतदान के प्रति जागरूक किया। हाथों में बोट देने की अपील की तर्जियां में बोट डालने जाना है अपना फर्ज निभाना, देश का भाग्य विधाता बने आप मतदाता, सबसे बड़ा दान मतदान, मतदाता बोट हमारा अधिकार, जैसी स्लोगन के साथ महिलाओं ने जागरूकता का सन्देश दिया। इसी तरह लोदाम में मतदाता जागरूकता रैली निकालकर मतदाताओं को मतदान के लिए प्रेरित किया गया। समूह की महिलाओं द्वारा शपथ लेकर ग्राम वासियों को स्वीप कार्यक्रम से अवगत कराया गया। इस दौरान सभी से लोकसभा चुनाव में 7 मई को मतदान करने का आह्वान किया।

संपादकीय कम मतदान ने भाजपा की परेशानी बढ़ाई

सहज तौर पर तलाक दे/ले

रिलेटिव इंपोर्टेंसी के कारण विवाह बरकरार न रख पाने वाले दंपति की शादी बंबई हाईकोर्ट ने निरस्त कर दी। अदालत के फैसले के अनुसार दंपति की हताशा को नजरंदाज नहीं किया जा सकता तथा कहा कि रिलेटिव इंपोर्टेंसी की विभिन्न शारीरिक व मानसिक वजह हो सकती है। विवाह जारी न रह पाने की वजह प्रत्यक्ष तौर पर पत्नी के साथ शारीरिक संबंध बना पाने में पति की अक्षमता है। अपने फैसले में उच्च अदालत ने कहा कि शुरुआत में संबंध न बना पाने के लिए उसने अपनी पत्नी को दोषी को ठहराया क्योंकि वह यह स्वीकारने में असमर्थ था कि वह दैहिक संबंध कायम करने में असमर्थ है। दोनों का विवाह मार्च 2023 में हुआ था, परंतु वे 17 दिन बाद ही अलग हो गए। मामले को फरवरी 2024 में परिवार अदालत ने खारिज कर दिया था। उसका कहना था कि मिली-भगत से तलाक की अर्जी दायर की गई है। पति नहीं चाहता था कि उस पर नपुंसकता का धब्बा लगे। रिलेटिव इंपोर्टेंसी में कोई शख्स किसी विशेष के साथ दैहिक संबंध कायम करने में असमर्थ हो जाता है। यह सामान्य नपुंसकता से भिन्न है। यह फैसला तलाक की अर्जी लगाने वाले ढेरों दंपतियों के लिए सुकून की सांस लेने वाला साबित हो सकता है। अपने समाज में अभी भी शादियां टूटने के मामले औसतन बहुत कम हैं। उस पर इस तरह के गोपन आरोप लगाने वाले अपनी सामाजिक तौहीन को लेकर बहुत भावुक हो जाते हैं। ज्यादातर मामलों में उन्हें अपनी चूक या अक्षमता को पचा पाने का नैतिक साहस नहीं होता है। चूंकि अभी भी अमूमन शादियां परिवारों द्वारा निश्चित की जाती हैं, ऐसे में दंपति में सामंजस्य न बैठ पाना, गैरमामूली नहीं कहा जा सकता। हालांकि यदि पति को ऐसा कोई संदेह पहले था तो उसे चिकित्सकीय परामर्श अवश्य लेनी चाहिए। विचारणीय बात तो यह भी है कि जब दोनों आपसी सहमति से विवाह के कायम न रखने को राजी हैं। अगर उनके दरम्यान कोई मतभेद नहीं हैं तो संबंध विच्छेद के मध्य किसी को आने की आवश्यकता नहीं रह जाती। पौरुषहीनता का आरोप जड़ कर संबंध विच्छेद करना, उसकी समूची शख्सियत को छलनी करने सरीखा है। उसे मानसिक, भावनात्मक व सामाजिक रूप से निर्वस्त्र करने से

विचार

अल्पसंख्यक श्रेणी का अधिकार

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने धर्म के आधार पर प्रियंका दलितों और आदिवासियों को मिलने वाले आरक्षण में सेंधमारी करने के संविधान विरोधी प्रयासों पर बड़ा हमला बोला है।

कांग्रेस से सवाल किया है, ‘क्या कांग्रेस ऐलान करेगी कि वे संविधान में पिछड़ों, दलितों और आदिवासियों के आरक्षण को कम करके इसे मुसलमानों को नहीं बांटेंगे?’ 2004 में जैसे ही कांग्रेस की केंद्र में सरकार बनी तो उसने सबसे पहले आंध्र प्रदेश में एसरी/एसटी आरक्षण को कम कर इस कोटे में मुसलमानों को आरक्षण देने का प्रयास किया था। यह कांग्रेस का ‘पायलट प्रोजेक्ट’ था, जिसे कांग्रेस पूरे देश में आजमाना चाहती थी। 2004-2010 के बीच कांग्रेस ने चार बार आंध्र प्रदेश में मुस्लिम आरक्षण लागू करने की कोशिश की थी, लेकिन सुप्रीम कोर्ट की जागरूकता के कारण वे अपने मंसूबे पूरे नहीं कर पाए। मोदी ने अब फिर से आरोप लगाया कि कांग्रेस ने अपने चुनाव घोषणापत्र में लोगों का धन छीन कर अपने ‘आस’ लोगों को बांटने की साजिश रची है। यह अत्यंत तल्ख टिप्पणी राजस्थान के टोंक जिले में एक चुनावी जनसभा में की।

प्रधानमंत्री की टिप्पणी संपूर्ण सत्य है। एक समय कांग्रेस सरकार की अल्पसंख्यक बनाम मुस्लिमों को पिछँदँ, दलित और आदिवासियों के संविधान में निर्धारित कोटा के अंतर्गत 4.5 प्रतिशत आरक्षण देने की मंशा रही थी। लेकिन सर्वोच्च न्यायालय ने भी कड़ा रु ख अपनाते हुए आंध्र प्रदेश उच्च न्यायालय के फैसले के विरुद्ध दायर अपील को खारिज कर दिया था। केंद्र सरकार इस मामले में सुप्रीम कोर्ट से स्थगन आदेश चाहती थी। इस मंशा के विपरीत कोर्ट ने सरकार से स्पष्ट करने को कहा था कि वह बताए कि उसने किस आधार पर अल्पसंख्यकों को 4.5 फीसदी आरक्षण देने का फैसला लिया? कोर्ट ने यह भी कहा कि इस तरह तो कोटे में उपकोटा आरक्षित करने का सिलसिला चलता रहेगा। दरअसल, आंध्र प्रदेश हाई कोर्ट ने धर्म के आधार पर' आरक्षण का लाभ संविधान के विरुद्ध बताया था।

वतमान म दिसम्बर, 2011 क बाद स शक्ताणक सस्थाना और सरकारी वौकरियों में ओबीसी वर्ग को 27 फीसद आरक्षण का प्रावधान है। लेकिन केंद्र सरकार ने ओबीसी के कोटे में खास तौर से मुस्लिमों को लुभाने के लिए 4.5 प्रतिशत आरक्षण दिए जाने का प्रावधान कर दिया था। इसे कानूनी रूप देते हुए ‘अल्पसंख्यकों से संबंधित’ और ‘अल्पसंख्यकों के लिए’ जैसे वाक्यों का जो प्रयोग किया गया वह असंगत है, जिसकी कोई जलूरत नहीं है। इस फैसले का व्यापक असर होना तय था क्योंकि यह प्रावधान आईआईटी जैसे केंद्रीय

शिक्षण संस्थानों में भी लागू हो गया था।
वर्चित समुदाय, चाहे अल्पसंख्यक हों अथवा गरीब सर्वर्जन को बेहतरी के उचित अवसर देना लाजिमी है क्योंकि बदहाली की सूखत अल्पसंख्यक अथवा जातिवादी वर्षमें से नहीं सुधारी जा सकती? खाद्य की उपलब्धता से लेकर शिक्षा और स्वास्थ्य संबंधी जितने भी ठोस मानवीय सरोकार हैं, उनको हासिल करना मौजूदा दौर में पूँजी और शिक्षा से ही संभव है। ऐसे में आरक्षण के सरोकारों के जो वास्तविक हकदार हैं, वे अपरिहार्य योग्यता के दायरे में न आ पाने के कारण उपेक्षित ही रहेंगे। अलवत्ता, आरक्षण का सारा लाभ वे बटोर ले जाएंगे जो आर्थिक रूप से पहले से ही सक्षम हैं, और जिनके बच्चे पब्लिक स्कूलों से पढ़े हैं। इसलिए इस संदर्भ में मुसलमानों और भाषायी अल्पसंख्यकों को सरकारी नौकरियों में आरक्षण देने की वकालत करने वाली रंगनाथ मिश्र आयोग की रिपोर्ट के भी कोई बुनियादी मायने नहीं रह गए थे? यह रिपोर्ट भी

मुसलमानों को सर्वधारिक प्रावधानों में आरक्षण जैसे विकल्प खोलने के लिए तैयार कराई गई थी। वर्तमान समय में मुसलमान, सिख, पारसी, ईसाई और बौद्ध ही अल्पसंख्यक दायरे में आते हैं जबकि जैन, बहाई और कुछ दूसरे धर्म-समुदाय भी अल्पसंख्यक दर्जा हासिल करना चाहते हैं लेकिन जैन समुदाय केंद्र द्वारा अधिसूचित सूची में नहीं है। इन्हीं वजहों से आतंकवाद के चलते अपनी ही पुश्टैनी जमीन से बेदखल कश्मीरी पंडित अल्पसंख्यक के दायरे में नहीं आ पा रहे हैं। दरअसल, ‘अल्पसंख्यक श्रेणी’ का अधिकार पा लेने के क्या राजनीतिक, सामाजिक, शैक्षिक और आर्थिक निहितार्थ हैं, इन्हें समझना मुश्किल है।

प्रमोद भार्गव

रिलेटिव इंपोटेंसी के कारण विवाह बरकरार न रख पाने वाले दंपति की शादी बंबई हाईकोर्ट ने निरस्त कर दी। अदालत के फैसले के अनुसार दंपति की हताशा को नजरंदाज नहीं किया जा सकता तथा कहा कि रिलेटिव इंपोटेंसी की विभिन्न शारीरिक व मानसिक वजह हो सकती है। विवाह जारी न रख पाने की वजह प्रत्यक्ष तौर पर पत्नी के साथ शारीरिक संबंध बना पाने में पति की अक्षमता है। अपने फैसले में उच्च अदालत ने कहा कि शुरुआत में संबंध न बना पाने के लिए उसने अपनी पत्नी को दोषी को ठहराया क्योंकि वह यह स्वीकारने में असमर्थ था कि वह दैहिक संबंध कायम करने में असमर्थ है। दोनों का विवाह मार्च 2023 में हुआ था, परंतु वे 17 दिन बाद ही अलग हो गए। मामले को फरवरी 2024 में परिवार अदालत ने खारिज कर दिया था। उसका कहना था कि मिली-भगत से तलाक की अर्जी दायर की गई है। पति नहीं चाहता था कि उस पर नपुंसकता का धब्बा लगे। रिलेटिव इंपोटेंसी में कोई शाख किसी विशेष के साथ दैहिक संबंध कायम करने में असमर्थ हो जाता है। यह सामान्य नपुंसकता से भिन्न है। यह फैसला तलाक की अर्जी लगाने वाले ढेरों दंपतियों के लिए सुकून की सांस लेन वाला साबित हो सकता है। अपने समाज में अभी भी शादियां टूटने के मामले औसतन बहुत कम हैं। उस पर इस तरह के गोपन आरोप लगाने वाले अपनी सामाजिक तौहीन को लेकर बहुत

भावुक हो जाते हैं। ज्यादातर मामलों में उन्हें अपनी चूक या अक्षमता को पचा पाने का नैतिक साहस नहीं होता है। चूंकि अभी भी अमूमन शादियां परिवारों द्वारा निश्चित की जाती हैं, ऐसे में दंपति में सामंजस्य न बैठ पाना, गैरमामूली नहीं कहा जा सकता। हालांकि यदि पति को ऐसा कोई संदेह पहले था तो उसे चिकित्सकीय परामर्श अवश्य लेनी चाहिए। विचारणीय बात तो यह भी है कि जब दोनों आपसी सहमति से विवाह के कायम न रखने को राजी हैं। अगर उनके दरम्यान कोई मतभेद नहीं हैं तो संबंध विच्छेद के मध्य किसी को आने की आवश्यकता नहीं रह जाती। पौरुषहीनता का आरोप जड़ कर संबंध विच्छेद करना, उसकी समूची शर्खियत को छलनी करने से रसीखा है। उसे मानसिक, भावनात्मक व सामाजिक रूप से निर्वस्त्र करने से बेहतर है, सहज तौर पर तलाक दे/ले लिया जाए।

A large-scale model of a voting booth is displayed at an exhibition. The model features a white ballot box with the text 'VOTE ELECTORS' on it. A large, yellow, articulated hand is shown pointing its index finger upwards towards the top of the ballot box. To the right of the ballot box is a tall, light-colored wooden structure with a digital display board showing the text 'VOTERS IS 80 LAKH'. On the digital screen, there is also a logo consisting of four colored bars (orange, white, teal, and grey) arranged in a diamond shape. In the background, a large crowd of people is visible, and a person in a yellow sari is standing near the digital display.

में भाजपा को लाडली बहनों से सबसे ज्यादा उम्मीद थी, वे मतदान के प्रति उदासीन दिखाई दी है। दूसरे चरण में खजुराहो, टीकमगढ़, दमोह, होशंगाबाद, रीवा और सतना में 59 प्रतिशत मतदान हुआ था। जबकि यहां 2019 में 67 प्रतिशत मतदान हुआ था। 2019 की तुलना में इनमें से चार सीटों पर महिलाओं ने कम मतदान किया है। टीकमगढ़ में 2019 में 63.80 प्रतिशत मतदान हुआ था, जबकि 2024 में 56.35 प्रतिशत रह गया। सतना में 2019 में 70.77 था, जो अब 59.21 रह गया। खजुराहो में 2019 में 64.76 प्रतिशत मतदान हुआ था, जो अब 53.06 रह गया। हालांकि दमोह और होशंगाबाद में महिलाओं ने बोट 2019 की तुलना में ज्यादा डाले। दो चरणों में 190 सीटों पर हुए मतदान में ज्यादातर सीटों पर कम मतदान के चलते भाजपा को झटका लगा है। जबकि अच्छे मतदान के लिए भाजपा ने प्रत्येक मतदान केंद्र पर सूक्ष्म प्रबंधन के दावे किए थे। कार्यकर्ताओं को जुटाकर अमित शाह तक ने मतदाता को मतदान केंद्र तक पहुंचाने के गुर सिखाए थे। उधर जिला प्रशासन भी अधिक मतदान के लिए उन सब टोने-टोटकों को आजमाता रहा है,

जिन्हें मतदान बढ़ाने का परंपरागत फर्मूला माना गया है। हालांकि इन टोटकों में ज्यादा कुछ असरकर्तव्य कभी दिखाई नहीं दिया। प्रशासन की हुंकार पर सरकारी स्कूलों के विद्यार्थियों, आगंवाड़ी महिलाओं कार्यकर्ताओं और स्व-सहायता समूह की महिलाओं को इकट्ठा करके मानव श्रृंखला बनाकर और कुछ नारे लगाकर इन टोटकों की इतिश्री न केवल प्रदेश बल्कि पूरे देश में कर ली जाती है। जिसके नतीजे लगभग शून्य होते हैं।
बहरहाल भाजपा संगठन इस तैयारी में लगा रहा कि मतदान लगभग 10 प्रतिशत तक बढ़ जाए। इस नारे भाजपा ने प्रत्येक मतदान केंद्र पर 370 वोट बढ़ाने का पाठ भी कार्यकर्ताओं को पढ़ाया था। परंतु हुआ इसका उल्टा, 10 से 12 प्रतिशत तक मत-प्रतिशत कम हो गया। साफ है, वोट बढ़ाने का फर्मूला कारणर साबित नहीं हुआ है। संभव है अगले पांच चरणों में भी अब यही ट्रैड देखने में आए। मध्यप्रदेश में भाजपा ने विधानसभा चुनाव में युद्ध स्तर पर मतदान केंद्रों तक मतदाता को पहुंचाने की जिम्मेदारी लेते हुए वोट-प्रतिशत 48.55 प्रतिशत तक पहुंचा दिया था। इसी का नतीजा रहा कि 230

विश्व शतरंज में नई भारतीय चुनौती

भारतीय शतरंज के उभरते युवा स्पिटर दोम्माराजू गुकेश का जन्म 29 मई 2006 को चेन्नई (तमिलनाडु) में हुआ। मार्च 2019 में दोम्माराजू गुकेश विश्व शतरंज के इतिहास में ग्रैंड मास्टर बनने वाले तीसरे सबसे युवा खिलाड़ी रहे। पीडे विश्व रैंकिंग में भारत के सर्वोच्च शतरंज खिलाड़ी भी बन चुके हैं। विश्व कप के दौरान दोम्माराजू गुकेश ने मिस्टराडिन इस्कंदरोव को हराकर 2755.9 की लाईव रेटिंग प्राप्त की। पिछे 2758 सितंबर 2023 में इनकी शीर्ष रेटिंग रही। अब 2763 के करीब आने वाली है और विश्व क्लासिकल ओपन वर्ग में नौवें स्थान पर पहुंचे, जबकि विश्वनाथन आनंद 2754 की रेटिंग के साथ दसवें स्थान पर थे। गुकेश ने 17.17 वर्ष की सबसे कम उम्र में 2750 की ईलो रेटिंग पार करने का मैनस कार्लसन का 17.34 वर्ष का रिकॉर्ड तोड़कर, पहली बार भारतीयों के नाम किया। पीडे सर्किट सर्कल में शीर्ष स्थान पर रहने वाले दोम्माराजू गुकेश ने इसी बूते वर्ष 2024 में टोरेंटो में होने वाले कैंडिडेट्स टूर्नामेंट में अपनी जगह सुनिश्चित कर ली। तेजी से उभरते इस भारतीय युवा शतरंज खिलाड़ी से हर भारतीय शतरंज प्रेमी को, भारतीय शतरंज के उच्चल भविष्य के प्रति बहुत उम्मीदें हैं। गुकेश ने वर्ष 2015 में एशियन स्कूल शतरंज चैम्पियनशिप और अंडर-12 आयु वर्ग में वर्ष 2018 में विश्व युवा शतरंज चैम्पियनशिप का अंडर-9 वर्ग जीता। अंडर-12 व्याक्तिगत रापड और ब्लॉट्रॉज, अंडर-12 टाम रापड और ब्लीट्रॉज तथा अंडर-12 क्लासिकल शतरंज के प्रारूप में, वर्ष 2018 एशियाई यूथ शतरंज चैम्पियनशिप में पांच स्वर्ण पदक जीतकर देश का नाम रौशन किया। एशियाई व चेस ओलिंपियाड खेलों में भारतीय टीम का प्रतिनिधित्व कर चुके हैं। 12 साल 7 महीने और 17 दिन की उम्र में ग्रैंड मास्टर बनने वाले भारत के पहले व विश्व के तीसरे सबसे युवा खिलाड़ी हैं। पीडे स्वर्ण जयंती वर्ष 2024 में प्रायोजित पीडे कैंडिडेट प्रतियोगिता 3 अप्रैल से 23 अप्रैल तक टोरेंटो में आयोजित हुई। 14 दौर की बाजियां डबल राउंड रोबिन के आधार पर खेली गईं। पूरे विश्व की नजरें कैंडिडेट्स के विजेता पर लगातार बनी रही। पहली बार कैंडिडेट्स ओपन वर्ग के इतिहास में तीन भारतीय युवा शतरंज सितारों ने दस्तक दी और महिला वर्ग में दो भारतीय महिला प्रतिभागियों ने शिरकत की। बेशक कैंडिडेट प्रतियोगिता के शुरूआती चरण में भारतीय युवाओं को नवोदित खिलाड़ियों के रूप में देखा जा रहा था, मगर जैसे जैसे यह प्रतिष्ठित प्रतियोगिता आगे बढ़ती गई, सभी भारतीय खिलाड़ी अपनी छाप विश्व शतरंज पटल पर छोड़ते गए। अभी तक मात्र विश्वनाथन आनंद ही कैंडिडेट्स तक पहुंच कर, कई बार विभिन्न शतरंज खेल प्रारूपों में विश्व चैम्पियन बने। मगर पीडे के आधिकारिक सौर्वं साल में एक नया भारतीय सितारा

विश्व शरंज प्रामया का दखन का मिला। भारत के लिए ये लम्हे गर्वित करने वाले हैं कि 17 वर्षीय दोमाराजू गुकेश विश्व शतरंज के कैंडिडेट्स के इतिहास में सबसे युवा विजेता खिलाड़ी बने। डी. गुकेश दूसरे भारतीय व विश्व के प्रथम युवा खिलाड़ी बने कैंडिडेट्स प्रतियोगिता को जीतकर। विश्व खिताब के लिए सबसे कम उम्र के चैलेंजर भी बने। डी. गुकेश ने 40 वर्ष पुराने इतिहास को बदल कर एक नया इतिहास रच दिया। प्रतियोगिता के दौरान डी. गुकेश ने अपनी 14 दौर की बाजियों में पहली बाजी भारतीय खिलाड़ी विदित गुजराती से ड्रॉ खेले। दूसरी बाजी भारत के एक और युवा सनसनी रमेश बाबू प्रज्ञानदा से जीती। तीसरे दौर की बाजी में पूर्व दो बार के कैंडिडेट्स विजेता इयान नेपोमिनियाची को बराबरी पर रोका। चौथी बाजी अमरीका के फाबियानो कारूआना के साथ बराबरी पर रोकी। पांचवें दौर में गुकेश ने निजत अबासोव को हराकर विजय प्राप्त की। छठे दौर में अमरीका के हिकारू नाकामुरा को बराबरी पर रोकते हुए ड्रॉ खेला। मात्र एक हार गुकेश को प्रतियोगिता के सातवें दौर की बाजी में अलीरेजा फिरोजा से मिली। इसके बाद इस युवा खिलाड़ी ने आठवें दौर की बाजी में विदित गुजराती को हरा दिया। नवें दौर की बाजी भारतीय सनसनी रमेश बाबू प्रज्ञानदा से ड्रॉ की। दसवें दौर की बाजी भी इयान नेपोमिनियाची से ड्रॊ खेला। ग्यारहवें दौर का बाजा फाबियानो कारूआना से ड्रॉ की। बारहवें दौर में पुनः निजत अबासोव को हराकर विजय प्राप्त की और 13वें दौर की बाजी में अपनी हार का बदला लेते हुए अलीरेजा फिरोजा को हराकर शीर्ष बढ़त कायम कर ली। अंतिम व चौदहवें दौर में हिकारू नाकामुरा को बराबरी पर रोकते हुए नौ अंक अर्जित करके प्रतियोगिता के निर्विवाद विजेता बने। हालांकि सभी भारतीयों ने ओपन वर्ग में शानदार प्रदर्शन किया और कई बड़े उलटफेर करते हुए विश्व शतरंज जगत को चकित किया। भारत से जन्मे इस खेल में पुनः भारत शीर्ष की ओर अग्रसर हो रहा है। वहीं महिला वर्ग में पहली बार दो भारतीय महिला खिलाड़ी को नेरू हम्पी व आर. वैशाली ने शिरकत करते हुए, अपने शानदार खेल से विश्व जगत को चकित किया और संयुक्त रूप से प्रतियोगिता में दूसरे स्थान पर रहीं। एक बात इस कैंडिडेट्स प्रतियोगिता से स्पष्ट सामने आई है कि यदि प्रारंभिक स्तर पर युवाओं को इस खेल से जोड़ा जाए तो परिणाम हमेसा सार्थक ही आएंगे। अतः इस ऐतिहासिक उपलब्धि के बाद भारतीय शतरंज महासंघ व सभी राज्य संघों को बुनियादी स्तर पर अधिक सक्रियता से कार्य करने की आवश्यकता है। युवाओं में सीखने की क्षमता वयस्कों से कहीं अधिक भी हो सकती है।

अमेठी से चुनाव क्यों नहीं लड़ते राहुल गांधी ?

प्रभुनाथ शुक्ल

जाजपा का विकल्प है तो उसे ले लें। यह बहते हुए भी कांग्रेस सरकार से नहीं जा सकते हैं। उससे भी अधिक गांधी परिवार वे नहीं जा सकते हैं। इन ने देश, कांग्रेस से जूँ जो योगदान दिया है, कहीं ना कहीं से कोना महफूज़ है नहीं जाएगा।

रायबरेली और अमेठी हैं जहां से श्रीमती इंदिरा गांधी को भी चुनाव हारना पड़ा। कांग्रेस विरोधी लहर में राज नारायण, जनता पार्टी से इंदिरा गांधी के खिलाफ चुनाव जीत गए। राहुल गांधी के खिलाफ स्मृति ईरानी जीत गई। लेकिन इसका यह मतलब नहीं है कि यह सीट कांग्रेस के हाथ से छीन गई। लोकतंत्र में हमेशा प्रयोग का विकल्प खुला रहता है। रायबरेली ने उन्हीं इंदिरा गांधी को फिर चुनकर दिल्ली भेजा। इसलिए हार जीत के डर से चुनाव न लड़ना गांधी परिवार की राजनीतिक कमजोरी होगी।

उत्तर प्रदेश बड़ा हिंदी भाषी राज्य है। गांधी परिवार मूल रूप से उत्तर प्रदेश से आता है। उत्तर प्रदेश से ही उसकी राजनीतिक शून्यता बैद्धिक राजनीति का संकेत नहीं देती। गांधी परिवार के लिए रायबरेली और अमेठी अहम सीट रही है। यहां की जनता ने इंदिरा गांधी, सोनिया गांधी, राजीव गांधी और राहुल गांधी के नेहरू जी को अनगिनत बार दिल्ली भेजा और प्रधानमंत्री का ताज़ पहलनाया अमेठी और रायबरेली गांधी परिवार की विरासत दे रखी रखी रखी है। यहां रखी रखी

उत्तरना चाहिए। राहुल गांधी को अमेठी की जनता ने भरपूर स्थेह और सम्मान दिया है। 2004 में राहुल गांधी पहली बार अमेठी से चुनाव लड़े और तीन बार सांसद चुने गए। 2019 में उन्होंने वायानाड और अमेठी दोनों से चुनाव लड़ा, लेकिन अमेठी में स्मृति ईरानी के सामने उन्हें पराजित होना पड़ा। हालांकि वायानाड की जनता ने उन्हें सांसद बनाकर दिल्ली भेजा। इस हालात में राहुल गांधी के सामने उत्तर और दक्षिण का पेंच फंसा है। दक्षिण में बीजेपी के मुकाबले कांग्रेस अधिक मजबूत स्थित में है। जबकि उत्तर प्रदेश में कांग्रेस अपने अस्तित्व के संकट से जूझ रही है। ऐसी विषम स्थिति में राहुल गांधी वायानाड को वरियता देते हुए देखें जा सकते हैं। यह भी सच है जब मोदी लहर में अमेठी ने उन्हें नाकारा तो वायानाड ने गले लगाया। राहुल और प्रियंका गांधी को लगता है कि अगर भाई-बहन चुनावी जंग में अमेठी और रायबरेली से उत्तरते हैं तो पार्टी के प्रचार की कमान वे नहीं संभाल पाएंगे।

गांधी परिवार का फैसला सवामन्य है। मुझे तो ऐसा नहीं लगता क्योंकि अगर बात पार्टी स्तर पर होती तो अब तक फैसला हो गया होता। लेकिन मुझे लगता है इसमें राहुल और प्रियंका गांधी का निजी निर्णय है जिसकी बजह से पार्टी फैसला नहीं ले पा रही है। क्योंकि प्रियंका गांधी ने कई बार संकेत दिया है वह चुनाव नहीं लड़ना चाहती है। लेकिन वर्तमान समय में जो स्थिति है वह कांग्रेस पार्टी के लिए बेहद चनौती पूर्ण है। जनता का सम्मान है। क्योंकि दोनों अहम सीट गांधी परिवार की परंपरागत विरासत रही है। यह अलग बात है कि अमेठी से भजपा की स्मृति ईरानी चुनाव जीतने में सफल रही हैं। कांग्रेस राजनीति के संक्रमण काल से गुजर रही है लेकिन गांधी परिवार की अहमियत कांग्रेस और देश के लिए उतनी ही अहम है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी अपने सियासी हमले के लिए सीधे तौर पर कांग्रेस को चुनते हैं। प्रधानमंत्री मोदी को अच्छी सियासी आलाचनाओं क्योंकि राजनीति जिसमें विरोधी के स्थान नहीं होता। दिल्ली का रास्ता गुजरता है। उत्तर प्रदेश की उपरिवार की उपस्थिति राजनीति के विश्लेषण को लोकतंत्र में जय पायाने नहीं रखता है। यह अलग बात है कि अमेठी से भजपा की स्मृति ईरानी चुनाव जीतने में सफल रही हैं। कांग्रेस राजनीति के संक्रमण काल से गुजर रही है लेकिन गांधी परिवार की अहमियत कांग्रेस और देश के लिए उतनी ही अहम है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी अपने सियासी हमले के लिए सीधे तौर पर कांग्रेस को चुनते हैं। प्रधानमंत्री मोदी को अच्छी

संक्षिप्त समाचार

मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने श्री सीमधर स्वामी जैन मंदिर ध्वजारोहण की पत्रिका का विमोचन किया



रायपुर (विश्व परिवार)। श्री सीमधर स्वामी जैन मंदिर व चमत्कारी श्री जिनकुशल सूरि जैन दादाबाड़ी के ध्वजारोहण व जन्मकल्याणक महोत्सव की पत्रिका का विमोचन मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय के मुख्यमंत्री को जैन गौशाला करकमलों से सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर दादाबाड़ी ट्रस्ट के अध्यक्ष संघोष बैठ, महासंविधान महेन्द्र कोचर, दृष्टी रुद्र जय सांखला व योगेश बंगानी ने गुलाब फूल से मुख्यमंत्री जी का स्वागत किया। इस अवसर पर ट्रस्ट की ओढ़कर मुख्यमंत्री जी का अभिनंदन किया गया व पत्रिका व श्रीफल से मुख्यमंत्री जी को ध्वजारोहण कार्यक्रम में 2 व 3 मई के लिए आयोजित किया गया। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय जी ने ग्राहिकालीन प्रभु भूमि में समिलित होने की स्वीकृति प्रदान की। ट्रस्ट के अध्यक्ष संघोष बैठ व महासंविधान महेन्द्र कोचर ने मुख्यमंत्री साय जी को शीर्षक जैन गौशाला की स्थापना संबंधित जानकारी दी गई, साय जी ने जैन गौशाला हेतु हस्तमृत मदद की बात कही।

शीघ्र जांच से 500 से अधिक प्राइमरी इम्यूनोडेफिसिएंसी की पहचान संभव

रायपुर (विश्व परिवार)। प्राथमिक रोग प्रतिरोधक क्षमता में कमी की वजह से होने वाले इंफेक्शन और रोगों की रोकथाम के लिए अखिल भारतीय आयोर्विज्ञान संस्थान के तत्वावधान में राष्ट्रीय सीमर्पी आयोजित की गई। इस अवसर पर विशेषज्ञों ने 500 से अधिक प्राइमरी इम्यूनोडेफिसिएंसी के नियंत्रण के लिए श्रीखं जांच करने और गुणवत्तापूर्ण उपचार प्रदान करने पर जोर दिया। एन इनसाइट इन्टर्न प्राइमरी इम्यूनोडेफिसिएंसी डिसआर्डर विषय पर वायोकैमिस्ट्री विभाग के तत्वावधान में आयोजित सीमर्पी द्वाटान करते हुए कार्यपालक निदेशक इन्स्टिट्यूटों ने जनरल अशोक किंदल (सेवानिवृत्त) ने कहा कि प्राइमरी इम्यूनोडेफिसिएंसी एक चुनौती है जिसके निदान के लिए डेटा रजिस्ट्री की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि गंभीर रोगों की जानकारी और उनके निदान के लिए राष्ट्रीय स्तर पर रजिस्ट्री बनाए जाने की आवश्यकता होती है जिससे डेटा एकत्रित कर क्षेत्र और अनुसंधान किया जा सके। विभागाध्यक्ष डॉ. एली मोहपात्रा ने कहा कि रोग प्रतिरोधक क्षमता के पूर्णांक कार्यशील न होने या अनुपस्थित होने की स्थिति में रोगियों को 500 प्रकार की प्राइमरी इम्यूनोडेफिसिएंसी हो सकती है जिनमें कई गंभीर भी हो सकती हैं। इससे रोगी को दुर्दम्भ बीमारिया भी हो सकती है।

केट ने आगामी लोकसभा चुनाव...पेज-01 का शेष

रायपुर जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी श्री विश्वदीप जी ने कहा कि पूरे देश में यह मैसेज जाना चाहिये कि छत्तीसगढ़ में इस बार अधिक मतदान हुआ है। उन्होंने व्यापारिक एसोसियेशन के प्रतिनिधियों से कहा कि आगे सभी अपार मतदान अवश्य करें एवं शत प्रतिशत मतदान करवायें। ग्रामीण क्षेत्रों की अपेक्षा राष्ट्रीय क्षेत्र में मतदान कम होता है। सकार उद्देश्य यही हो कि सकारे ज्यादा मतदान हो पाएं ताकि अपाका कोई भी उद्देश्य किसी दल विशेष का फूट लुका हुआ नहीं होना चाहिये। उन्होंने कहा कि मतदान के लिए अधिक लोग मतदान केंद्रों पर पहुंचें। मतदान केंद्रों पर सभी बुनियादी सुविधाओं का ख्याल रखा गया है। मतदान जागरूकता और मतदान प्रतिशत बढ़ने के लिए कई तरह के कार्यक्रम आयोजित किये जा रहे हैं। लोकसभा चुनाव 2024 में इस बार मतदानाओं के लिए 2 घण्टे का समय बढ़ा दिया गया है।

उपरोक्त बैठक में केट एवं युवा टीम के पदाधिकारी मुख्य रूप से अमर पायानी, मूरली मालू, अमर गिदावनी, जेन्सन दोशी, परमानन्द जैन विक्रम सिंदेव, सुरियो रिंग, भरत जैन, अजय अवनीत सिंह, अमर चिंगारी, विजय पटेल, विजय शर्मा, राकेश औचानी, नरेश गंगवारी, सुरील धूपड़, मेशेश खिलोसिया, जयवर्म मुकेजो, जिनेन्द्र गोलछा, विजय जैन, आसिफ वैद, महेन्द्र कुमार बारायेडिया, सतीश श्रीवास्तव, मोहन वर्लयानी, नागेन्द्र तिवारी, दीपक विधानी, विक्रांत राठोर, परविन्दर सिंह, रमेश खांडिया, हस्रमुख पटेल, सुरेश वासवानी, सुरील कुमार लालवानी, राजेश बिहानी, अमित गुप्ता, मनीष कुमार सोनी, शैलेन्द्र शुक्ला, भूमेश साह, रतनदीप सिंह, प्रकाश जोशी, सोपान अग्रवाल, मुकेश जोशी, रमेश पटेल, राजेश साह, प्रकाश माखीजा, समीर वेस्तावानी उपरिक्षण है।

1
मई

सुख-दुख के साथी बृजमोहन भईया ल जन्मदिन के गाड़ा-गाड़ा बधाई



जीवित
शैरदः
शतम्



विनीत : टंकराम वर्मा, अजय चन्द्राकर, राजेश मूणत,
शिवरतन शर्मा, मोतीलाल साहू, पुरंदर मिश्रा, अनुज शर्मा,
गुरु खुशवंत साहेब, इन्द्रकुमार साहू, देवजी भाई पटेल